अदृश्य संग्रह

(जर्मनी के आर्थिक मंदी के दिनों की एक घटना)

ड्रैसडन के बाद ट्रेन जब एक जंक्शन पर पहुँची तो एक अधेड़ सज्जन हमारे डिब्बे में सवार हुये। उन्होंने सब मुसाफ़िरों की तरफ सौहार्द्रपूर्वक मुस्कराकर देखा। मुझ पर उनकी विशेष कृपा-दृष्टि पड़ी, जैसे वे मेरे पुराने मित्र हों। मुझे संकोच में पड़ा देखकर उन्होंने अपना परिचय दिया। सचमुच वे मेरे पुराने परिचित निकले। वे बर्लिन के एक प्रसिद्ध कला-पारखी और कला-चित्रों के व्यापारी थे। युद्ध से पहले मैंने उनसे अनेक अलभ्य हस्तलिपियां और पुस्तकें ख़रीदीं थीं। वे मेरे सामने वाली खाली सीट पर आकर बैठ गये और इधर-उधर की बातें शुरू हो गईं। बातचीत के दौरान में उन्होंने बताया कि वे व्यापार के सिलसिले में कहीं गये थे और उन्हें एक ऐसा अनुभव हुआ जो उनके सैंतीस वर्ष के व्यापारिक जीवन में अभूतपूर्व था। इतना परिचय ही काफ़ी है। अब आप उन्हीं से यह कहानी सुनिये, मैं उद्धरण चिह्नों के प्रयोग से कहानी में पेचीदगी नहीं पैदा करना चाहता।

आप जानते हैं (उन्होंने कहा) कि मन्दी के बाद हमारे कारोबार में क्या हो रहा है। मुनाफ़ाख़ोरों को भी प्राचीन कलाकृतियों के संग्रह का शौक चर्राया है और वे प्राचीन चित्रों के पीछे दीवाने हो रहे हैं। उनके लालच को सन्तुष्ट करना कठिन काम है, विशेषकर मेरे जैसे व्यक्ति

के लिये, जो सर्वोत्तम कलाकृतियां अपने लिये सुरक्षित रखना चाहता है। अगर उनका बस चले तो वे मेरी कमीज़ के बटन और पढ़ने का लैम्प तक लूट लें। उनके खरीदने के लिये रोज़ इतना सामान कहां से आये? मैं जानता हूँ कि कलाकृतियों के लिए 'सामान' शब्द आपको खटक रहा है, लेकिन क्षमा करें, खरीददारों के सम्पर्क से मैं ऐसे शब्द सीख गया हूँ। बुरी संगत का बुरा फल.........पुरानी अलभ्य पुस्तकों का मेरे लिये वही महत्त्व है, जो कपड़ों के शौकीन के लिये एक क़ीमती ओवरकोट का महत्त्व होता है, या किसी मूर्ख लखपति के लिये ग्रुरसीनों के स्केच का महत्त्व होता है, जो कलाकृति में अपने ख़र्च किये गये पैसों की आत्मा देखता है।

इन पैसा फूंकने वालों के लालच का मुक़ाबिला करना कठिन है। हाल ही में मैंने पाया कि मेरे पास केवल इनी-गिनी कलाकृतियां ही बच रही हैं। संभव है, मुझे अपना कारोबार बन्द करना पड़े। मेरे बाप-दादा के ज़माने में कारोबार खूब चला हुआ था, लेकिन तब दुकान में कूड़ा भरा था, जिसे सन् १९१४ से पहले कोई फेरीवाला भी बेचने को राज़ी न होता।

इस परेशानी में एक दिन मैं अपने पुराने ख़रीदारों की सूची देख रहा था। मुझे ख्याल आया, शायद मन्दी के कारण वे उन कलाकृतियों को बेचने के लिये तैयार हो जायें, जो उन्होंने सम्पन्नता के दिनों में मुझ से खरीदी थीं। ऐसी सूचियां, लाशों से पटे युद्ध-क्षेत्र की तरह होती हैं। मुझे मालूम था कि उनमें से अधिकाँश लोग या तो मर चुके होंगे या मन्दी के कारण अपने कला-संग्रह कभी के बेच चुके होंगे। मेरे पास एक व्यक्ति के पत्रों का पुलिन्दा पड़ा था, लेकिन मैं उसे भूल चुका था, क्योंकि १९१४ के विस्फोट के बाद उसने मुझ से कुछ नहीं खरीदा था। अब तो वह बहुत बूढ़ा होगा। उसके पत्र आधी शताब्दी पहले लिखे गये थे, जब मेरे दादा कारोबार चलाते थे। पिछले सैंतीस बरसों में वह कभी मेरे सम्पर्क में नहीं आया था।

उसके खतों से स्पष्ट था कि वह उन सनकी संग्रहवादियों में से था, जो यत्र-तत्र आज भी जर्मनी के छोटे शहरों में मिल जाते हैं। उसकी लिखावट टेढ़ी-मेढ़ी थी, और उसके हर आर्डर के नीचे लाल स्याही से लकीरें पड़ी थीं। हर क़ीमत को आंकड़ों और शब्दों में लिखा गया था ताकि धोखा न हो सके। ये पत्र पुरानी कापियों को फाड़कर लिखे गये थे। लिफ़ाफ़ों के रंग अलग-अलग थे, जिनसे पता चलता था कि वह किसी जंगली इलाके का रहने वाला है। उसके नाम के नीचे हर बार लिखा रहता था, "फारेस्ट रेंजर और इकोनोमिक एडवाइज़र, रिटायर्ड; प्रथम श्रेणी के लौह क्रास का विजेता।" वह १८७०-७१ के युद्ध में सम्मानित किया गया था, इसलिये अब वह अस्सी बरस के क़रीब ज़रूर होगा।

लेकिन अपनी सारी विलक्षणता के बावजूद उसने छपाई और नक्काशी के संग्रह में बड़ी बुद्धिमता और सुरुचि का परिचय दिया था। उसके आर्डरों को ग़ौर से पढ़ने से पता चलता था कि उस ज़माने में जब लोग नक्काशी के काम के लिये मुँहमांगे दाम देने के लिये तैयार थे, यह फूहड़ देहाती हमारी दुकान का अलभ्य संग्रह सस्ते में लूट ले गया था। आज उस संग्रह की क़ीमत लाखों तक जा सकती है। मैंने सोचा, हो न हो इस आदमी ने और बहुत-से संग्रह भी जमा किये होंगे। क्या ये चीज़ें अब भी उसके पास सुरक्षित होंगी! अगर उस आदमी ने यह संग्रह बेचा होता तो मेरे कानों तक इसकी ख़बर ज़रूर पहुँचती। अगर वह मर गया होगा, तो यह कलाकृतियाँ उसके उत्तराधिकारियों के पास सुरक्षित होंगी।

मैं कल शाम को ही सैक्सनी के उस दूरदराज़ क़स्बे में गया था। रेलवे स्टेशन से बाहर निकलकर जब मैं क़स्बे की सड़क पर पहुँचा तो मुझे विश्वास हो गया कि इन टूटे-फूटे घरों में विश्वविख्यात कलाकृतियों को पाना असम्भव है। खैर, मैंने डाकख़ाने में जाकर पूछताछ की, और मुझे मालूम हुआ कि उस नाम का व्यक्ति अब भी ज़िन्दा है। उसके

घर के नज़दीक पहुँचकर मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा। यह आज दोपहर की बात है।

पिछली शताब्दी में सट्टे के मुनाफ़ाखोरों ने धड़ाधड़ सस्ते मकान तैयार करके किराये पर चढ़ा दिये थे। वह व्यक्ति भी ऐसे ही एक मकान की दूसरी मंज़िल पर रहता था। निचले हिस्से में एक टेलर मास्टर की दुकान थी। मैंने उसके नाम की तख्ती के पास जाकर घन्टी बजाई। एक सफेद बालों वाली बुढ़िया ने आकर दरवाज़ा खोला। मैंने उसे अपना कार्ड देकर गृहस्वामी के बारे में पूछा। औरत संदिग्ध नज़रों से मेरे चेहरे की ओर देखने लगी। उस अभागे क़स्बे में राजधानी के किसी व्यक्ति का आना एक सनसनी-खेज़ घटना थी। उस औरत ने आदरपूर्वक मुझे प्रतीक्षा करने के लिये कहा और भीतर ग़ायब हो गई। भीतर से एक ऊँची आवाज़ सुनाई दी, "हेर रेकनर, बर्लिन के मशहूर कला व्यापारी ? मैं उनसे ज़रूर मिलूँगा।" वह औरत फिर आई और मुझे अपने साथ भीतर लिवा ले गई।

घर का सामान और पर्दे सस्ते थे। फौजी कपड़े पहने एक वृद्ध ने मेरे स्वागत के लिये हाथ बढ़ाये। मुझे हाथ मिलाने के लिये उसके नज़दीक जाना पड़ा—उसके इस विचित्र व्यवहार से मुझे कम हैरानी नहीं हुई, लेकिन अगले ही क्षण मुझे सब पता चल गया—वह व्यक्ति अंधा था।

बचपन से ही अंधे व्यक्तियों की उपस्थिति में मुझे घबराहट अनुभव होती है। एक स्वस्थ जीवित व्यक्ति को इस तरह असहाय देखकर मेरा मन आत्मग्लानि से भर उठता है। मुझे लगता है, जैसे मैं उसकी असहायता का फायदा उठा रहा हूँ। उस व्यक्ति की ज्योतिहीन पुतलियों को देखकर मुझे घबराहट हुई, लेकिन उसने हँसकर कहा :

"आज का दिन ऐतिहासिक दिन है। बर्लिन का एक बड़ा आदमी इस कस्बे में बिना खबर दिये आ पहुँचे, इससे बड़ा चमत्कार कौन-सा हो सकता है ? फिर आप जैसे कला-व्यवसायी से तो हम देहाती हमेशा

सावधान रहते हैं। हमारे यहाँ एक कहावत है, 'बनजारों को देखते ही अपनी जेबों के बटन और घर के दरवाजे बंद कर लो!' मैं जान गया हूँ, आप किस लिये आये हैं, मैंने सुना है आजकल व्यापार में बड़ी मंदी है, ख़रीदार बड़ी मुश्किल से मिलते हैं, इसलिये कला-व्यवसायी अपने पुराने खरीदारों की तलाश में घूम रहे हैं। लेकिन आपको यहाँ आकर निराशा होगी। हम पेन्शन पाने वालों को अगर सूखी रोटी भी मिल जाये तो बहुत है। एक ज़माने में मुझे भी संग्रह का शौक था, लेकिन अब वे दिन बीत गये।"

मैंने उसे बताना चाहा कि उसे गलतफ़हमी हो गई है। मैं पड़ोस के एक कस्बे में आया था, इसलिये अपने पुराने और प्रतिष्ठित ख़रीदार से मिलने का लोभ संवरण न कर सका था, जो किसी जमाने में जर्मनी भर में सबसे बड़ा संग्रहकर्त्ता था। यह सुनते ही, बूढ़े के चेहरे में आश्चर्यजनक परिवर्तन हो गया। एक अज्ञात गर्व से उसका चेहरा आलोकित हो उठा और उसने अपनी पत्नी की ओर मुड़कर कहा, "सुना तुमने!" उसकी आवाज़ में अपूर्व कोमलता आ गयी थी। उसका फौजी अक्खड़पन न जाने कहां ग़ायब हो गया था :

"आपकी बड़ी कृपा है कि आपने सिर्फ मुझ जैसे हीनव्यक्ति से मिलने के लिये इतना कष्ट उठाया। आपको दिखाने के लिये अब भी मेरे पास कुछ ऐसी कलाकृतियाँ हैं, जो आपको बर्लिन, वियना, यहाँ तक कि पैरिस के अजायबघरों में भी नहीं मिलेंगी (खुदा की गाज गिरे पैरिस पर!)। जो आदमी पचास बरसों से कलाकृतियों का संग्रह करता आया हो, उसके मुकाबिले की चीज़ें कहीं नहीं मिल सकतीं। एलिज़ाबेथ, मेरी अलमारी की चाबी लाओ!"

इसी समय एक विचित्र बात हुई। उसकी पत्नी जो अभी तक मुस्करा रही थी, सहसा भय से चौंक उठी। उसने अपने दोनों हाथ उठाकर मुझसे किसी बात की याचना की। मैं इस सांकेतिक भाषा को न समझ सका। उसने पति के कंधे थपथपाकर कहा :

"फ्रांज़ प्यारे, तुमने हमारे अतिथि से यह तो पूछा ही नहीं, कि उनके पास समय भी है या नहीं," फिर वह मेरी ओर मुड़कर बोली, "मुझे अफ़सोस है कि हमारे घर में आपके लिये पर्याप्त भोजन नहीं है। आप तो निश्चय ही किसी होटल में खाना खायेंगे न ! खाने के बाद आप काफी यहीं पीजियेगा, तबतक हमारी बेटी एना मेरिया भी आ जायेगी। उसको कलाकृतियों के बारे में मुझसे कही अधिक पता है।

एक बार फिर उसने याचनापूर्ण दृष्टि से मेरी ओर देखा। वह नहीं चाहती थी कि मैं उसी समय कला-संग्रह देखने बैठ जाऊँ। मैंने कहा कि गोल्डन स्टैग होटल में मुझे किसी मित्र ने खाने का निमन्त्रण दिया है। तीन बजे के करीब मैं लौट आऊँगा।

गृहस्वामी ने इस तरह मुंह बनाया, जैसे किसी बच्चे से उसका प्रिय खिलौना छीन लिया गया हो।

"क्यों नहीं, मैं जानता हूँ, आप बर्लिन के पन्डों के पास समय कहाँ रहता है। लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप मेरा कला-संग्रह अवश्य देखें, मेरे पास अमूल्य कृतियों की सत्ताईस पेटियाँ हैं। अगर आप ठीक तीन बजे लौट आयें, तो छः बजे तक वापिस लौट सकते हैं।"

उसकी पत्नी मुझे छोड़ने के लिये दरवाजे तक आई। उसने मेरे पास आकर धीमे स्वर में कहा—

"तीन बजे से पहले मैं एना मेरिया को आपके होटल में भेजूंगी। इसके कई कारण हैं, जो इस समय मैं आपको नहीं बता सकूंगी।"

"ज़रूर-ज़रूर—आपकी बेटी से मिलकर मुझे बड़ी खुशी होगी।"

एक घन्टे बाद मैं खाना खाकर होटल के ड्राइंगरूम में आकर बैठा ही था कि एना मेरिया क्रोनफेल्ड आ पहुँची। वह अधेड़ उम्र की लड़की थी, और सादे कपड़े पहने हुए थी। मुझे देखकर वह घबरा सी गई। मैंने उससे कहा कि अगर उसके पिता ने मुझे फौरन बुला भेजा है तो मैं फौरन उसके साथ चल पड़ूँगा। यह सुनते ही उसका चेहरा लाल हो उठा और उसने लड़खड़ाती ज़बान में मुझसे कुछ कहने की इच्छा प्रकट की।

"मेहरबानी करके बैठ जाइये ।" मैंने एक कुर्सी बढ़ाते हुए कहा ।

उसके ओंठ और हाथ काँप रहे थे । उसने अपनी बात शुरू की ।

"माँ ने मुझे आपके पास भेजा है । हमारी एक प्रार्थना है । जब आप हमारे घर आयेंगे तो पिता जी आपको अपना संग्रह दिखाने के लिये व्याकुल हो उठेंगे । संग्रह......संग्रह......सच पूछिये तो अब उस संग्रह में बहुत थोड़ी चीजें बच रही हैं ।"

फिर उसने करुण स्वर में कहा, "मैं आपसे कुछ नहीं छिपाऊँगी... ......आप जानते हैं, आजकल हम लोगों को किन-किन मुसीबतों का सामना करना पड़ रहा है । युद्ध के बाद ही मेरे पिता की आँखें जाती रहीं थीं, शायद उत्तेजना के कारण ही यह हुआ था । सत्तर बरस के बूढ़े होते हुए भी वे फिर लड़ाई में हिस्सा लेने की ज़िद कर रहे थे । लेकिन इस उम्र में उन्हें कौन फौज में लेता ? फिर जब हमारी फौजों को आगे बढ़ने से रोक दिया गया तो पिताजी के दिल को बड़ा सदमा पहुँचा । डाक्टर का कहना है कि इसी से उनकी दृष्टि कमजोर होती गई । वैसे उनकी सेहत अब भी अच्छी है, जैसा आपने स्वयं देख ही लिया होगा । सन् १९१४ तक वे लम्बी सैर करने और शिकार खेलने जाते थे । आँखों के जाने के बाद उन्हें अब अपने कला-संग्रह में ही रुचि रह गई है । वे दिन में एक बार उसे जरूर देखते हैं । लेकिन बिना आँखों के भला कोई कैसे देख सकता है ? रोज दोपहर को वे सारी जिल्दें अपनी मेज़ पर मँगवाते हैं और सब चित्रों पर बारी-बारी से उंगलियाँ फेरते हैं । उनके जीवन का एकमात्र आनन्द ये चित्र हैं । वे मुझसे नीलामियों की खबरें पढ़वाकर सुनते हैं—कलाकृतियों का दाम जितना ऊँचा लगाया जाता है, उतना ही पिता जी का उत्साह भी बढ़ता जाता है ।

"पिता जी को मन्दी का कुछ पता नहीं । उन्हें यह भी नहीं पता कि हम तबाह हो चुके हैं, और उनकी पेन्शन से तो एक दिन की खुराक भी नहीं खरीदी जा सकती । इसके अलावा हमें अपनी बहन के बच्चों की परवरिश भी करनी पड़ती है । हमारे बहनोई वरदूँ के युद्ध में मारे

गये थे। पिता जी से हमने कभी ये बातें नहीं बताईं। हम बड़ी किफ़ा-यत से रहते हैं, फिर भी गुजारा नहीं चलता। हमने मजबूर होकर अपने गहने बेचने शुरू कर दिये, ताकि पिता जी के संग्रह को आंच न आये। पिता जी ने अपनी सारी आमदनी काष्ठ-कृतियों और ताम्रपत्रों पर ख़र्च कर डाली थी। संग्रहकर्त्ता की सनक! आख़िर एक दिन ऐसा भी आया, जब हमारे सामने दो ही रास्ते रह गये—या तो पिता जी को भूखों मरते देखा जाये, या उनके संग्रह को बेचकर आर्थिक संकट से छुटकारा पाया जाये। हमने पिता जी से इजाज़त मांगना उचित नहीं समझा। उससे क्या लाभ होता? उन्हें क्या पता कि आजकल खाने की चीज़ें कितनी मुश्किल से मिलती हैं? उन्हें तो यह भी नहीं पता कि लड़ाई में जर्मनी की हार हुई थी और उसे अल्सेस-लोरेन के प्रदेश फ्रांस को लौटा देने पड़े थे। हम उन्हें अख़बारों में से राजनैतिक समाचार कभी नहीं सुनाते।

सबसे पहले हमने रैम्ब्रां की एक कृति बेची, जिससे हमें कई हज़ार मार्क वसूल हुए। हमारा ख़्याल था कि हम बरसों तक उसी से गुज़ारा चला लेंगे, लेकिन आप जानते हैं कि १९२२—१९२३ में मार्क की क़ीमत कितनी रह गई थी। दो महीने के भीतर सारी रक़म ख़र्च हो गयी और हमें मजबूर होकर एक के बाद एक कलाकृतियां बेचनी पड़ीं। वह मन्दी का भयानकतम दौर था। कला-व्यापारी जान-बूझकर सौदा करने में देर कर देते थे, जिससे कुछ ही दिनों में क़ीमत और भी कम हो जाती थी। हमने नीलाम घरों का आश्रय भी लिया, लेकिन हमें धोखा ही हुआ। हालांकि हमें एक कृति के दस लाख मार्क मिले थे। लेकिन दस लाख मार्क मिट्टी के बराबर थे। इस तरह सारा संग्रह दो समय की रोटी जुटाने में ही बर्बाद हो गया—दोनों समय खाना भी हमें कहां नसीब हुआ?

"इसीलिये आपको देखकर मां इतनी घबरा गई थीं। सन्दूकचियां खोलते ही हमारा धोखा प्रकट हो जायेगा। पिता जी हर चित्र को छू

कर बता सकते हैं। हमने तस्वीरें बेचकर कोरी कैनवस को उन्हीं फ्रेमों में मढ़वा दिया था, इसलिये उन्हें सच्चाई का कुछ पता न चल सका। उन्हें तो छूने और गिनने से ही सन्तोष मिल जाता है। आजतक उन्होंने किसी कुपात्र को अपना संग्रह नहीं दिखाया। उन्हें कला से इतना प्रेम है कि अगर उन्हें मालूम हो गया कि उनका संग्रह बिक चुका है तो उनका दिल टूट जायेगा। बहुत साल पहले उन्होंने ड्रेसडन के अजायबघर के क्यूरेटर को अपना संग्रह दिखाया था।

मेरिया ने भग्नस्वर में कहा, "मैं आपसे विनती करती हूँ कि आप पिता जी का सुख-स्वप्न मत तोड़ियेगा। हम जानते हैं कि हमने पाप किया है, लेकिन जिन्दा रहने का इसके सिवा और कोई चारा भी तो नहीं था। अनाथ बच्चे पुराने चित्रों से कहीं अधिक कीमती हैं। इसके अलावा पिता जी को अभी तक इस बारे में कुछ नहीं मालूम। वे अब भी हर तस्वीर से बातें करते हैं, जैसे हर तस्वीर उनकी दोस्त हो। वे कितने बरसों से किसी कलाप्रेमी को अपना संग्रह दिखाने के लिये व्याकुल हैं। आज उन्हें कितनी खुशी होगी......काश ! अगर आप भी हमारी तरह उन्हें धोखा......"

मैं आपको बता नहीं सकता कि उस लड़की की आवाज़ में कितनी वेदना थी ! मैंने इस मन्दी के ज़माने में कितने कलाप्रेमियों को रोटी के एक टुकड़े की ख़ातिर अपने क़ीमती संग्रह बेचते देखा है, लेकिन इतना दुख मुझे पहले कभी नहीं हुआ था। मैंने अभिनय करना स्वीकार कर लिया।

रास्ते में मुझे उस लड़की से मालूम हुआ कि उन अभागिनों ने कितनी कम कीमत पर कई दुर्लभ चित्र बेच डाले थे। मैंने निश्चय किया कि जैसे भी हो इस परिवार की सहायता करूँगा। जब हम सीढ़ियां चढ़ने लगे तो भीतर से आवाज़ आई, "चले आइये ! चले आइये !" अन्धे व्यक्तियों की श्रवणशक्ति बहुत तेज़ होती है। उसने दूर से ही हमारे क़दमों की आवाज़ पहचान ली थी।

बुढ़िया ने मुस्कराकर कहा, "वैसे तो फ्रैंज़ खाने के बाद आराम करते हैं, लेकिन आप के आने की खुशी में आज ये जागते रहे हैं।" मेज़ पर कलाकृतियों का ढेर लगा था। उस अन्धे कलाप्रेमी ने मेरी बाँह पकड़कर मुझे कुर्सी पर बिठा दिया।

"मेरे पास बहुत चीज़ें हैं, आइये फ़ौरन देखना शुरू कर दें, वरना आपको देर हो जायेगी। देखिये, इस अलबम में द्यूरर्ज की कृतियां हैं। हैं न शानदार ! आप खुद ही फैसला कीजिये !"

वह बड़ी सावधानी से चित्रों को छू रहा था (जैसे कोई बड़ी कीमती टूटने वाली चीज़ को छू रहा हो)। उसने कोरी कैनवस को मेरी आँखों और अपनी दृष्टिहीन आंखों के सामने खड़ा किया। उसके उत्साह को देखकर यह विश्वास नहीं होता था कि वह अंधा था। उसका चेहरा एक विचित्र आभा से चमक रहा था।

"क्या आपने कभी इससे बढ़िया चित्र देखा है ? हर चीज़ शीशे की तरह साफ़ है। ड्रेसडन के अजायबघर में भी एक ऐसा चित्र है, लेकिन इस चित्र के सामने वह बिल्कुल तुच्छ है। फिर मेरे पास इन चित्रों की पूरी नस्ल है।"

उसने चित्र की पीठ पर लिखी अदृश्य पँक्तियां पढ़ीं, "यह देखिये नैगलर रेमी और एज़डेल की मोहरें। इन लोगों को क्या पता था कि यह संग्रह कभी मेरे छोटे-से मकान की शोभा बढ़ायेगा ?"

उसे कोरी कैनवस पर उंगलियाँ चलाते देखकर मैं कांप उठा, विशेषकर जब उसके नाखूनों ने तथाकथित मोहरों को छुआ। मेरी जीभ तालू से चिपक गई। क्रोनफील्ड की पत्नी और बेटी को देखकर मैंने किसी तरह अपने आपको संभाल लिया। फिर मैंने उत्साह का प्रदर्शन करते हुए कहा—

"सचमुच यह चित्र एकदम दुर्लभ है।" गर्व से उसका चेहरा खिल उठा।

"लेकिन यह चित्र तो कुछ भी नहीं है। जरा इन दो चित्रों की

ओर देखिये, 'अवसाद' और 'भावुकता'। इसके रंग अब भी कितने ताजे हैं ! आपके बर्लिन के कला-व्यवसायी और आर्ट-गैलरियों के अधिकारी इसे देखकर ईर्ष्या से जल मरेंगे !"

यह नाटक दो घंटे तक चलता रहा। उसने एक के बाद एक अलबम दिखाई। लगातार खाली कैनवस के टुकड़ों की ओर देखना और बीच-बीच में उनकी प्रशंसा करते जाना, मेरा एकमात्र कर्तव्य बन गया था। उसके उत्साह को देखकर मेरे कलाप्रेम को बड़ी प्रेरणा मिली।

केवल एक बार दुर्भाग्य आते-आते टल गया। वह मुझे रेम्ब्रा का एक चित्र 'दिखा' रहा था, जो सचमुच बड़ा कीमती रहा होगा। कैनवस पर अपनी उंगलियाँ फेरते-फेरते सहसा वह रुक गया। उसके चेहरे पर विषाद के बादल छा गये। कांपते हुए ओंठों से उसने पूछा :

"यह रेम्ब्रां का चित्र है न ! घर में मेरे सिवा कोई इस संग्रह को हाथ नहीं लगा सकता, फिर रेम्ब्रां किधर गया ?"

"यह रेम्ब्रां ही है हेर क्रोनफील्ड !" मैं अपनी भूली हुई स्मृतियों को बटोरकर उस चित्र के सौन्दर्य की प्रशंसा करने लगा।

प्रशंसा सुनकर उसका चेहरा फिर खिल उठा। उसने विजेता के स्वर में दोनों औरतों से कहा :

"देखा, ये सज्जन कलाप्रेमी हैं और कला की कद्र करना जानते हैं। तुम दोनों को शिकायत रहती थी कि मैं कलाकृतियों के संग्रह में पैसे लुटाता रहता हूँ। यह सच है कि आधी शताब्दी से मैंने अपने को बियर, तम्बाकू, यात्रा, थियेटर, पुस्तकों से वंचित रखा है और मैं अपनी बचत की कौड़ी-कौड़ी अपने इस शौक में खर्च करता रहा हूँ, जिससे तुम्हें सख्त नफरत है। लेकिन हेर रैकनर मुझसे सहमत होंगे। जब मैं इस दुनिया से चला जाऊँगा तो तुम ड्रेसडन के धनी परिवारों से भी अधिक धनी हो जाओगी। तब तुम्हें मेरी इस 'सनक' की कीमत मालूम होगी। लेकिन जब तक मैं जिन्दा हूँ, इस संग्रह को अपने से जुदा नहीं होने दूंगा। मेरे कब्र में जाने के बाद ये महाशय या कोई और कला-

व्यवसायी इस संग्रह को बेचने में तुम्हारी मदद करेंगे। इसके सिवा कोई चारा नहीं, क्योंकि मेरे मरने के बाद मेरी पेन्शन भी ख़त्म हो जायेगी।"

वह बड़े दुलार से उन लुटी हुई अलबमों पर उंगलियाँ फेर रहा था। यह दृश्य बड़ा करुण था। १९१४ के बाद मैंने किसी जर्मन के चेहरे पर इतनी खुशी नहीं देखी। उसकी पत्नी और बेटी की आँखों में आँसू आ गये, जेरुसलम की उन दो बूढ़ी औरतों की तरह, जो पवित्र समाधि के खज़ाने को लुटा देखकर रोई थीं। लेकिन उस आदमी का उत्साह अब भी कम नहीं हुआ था। वह एक के बाद एक कलाकृति को दिखाता चला गया। अन्त में जब उसने सब कोरी कैनवसें अलबम में रख दीं, तो मेरे दिल का भार कुछ हल्का हुआ।

मेज़ पर कॉफी आई। मेरा मेज़मान अभी भी नहीं थका था, वह इन कलाकृतियों का इतिहास सुनाने लगा और उन्हें एक बार फिर दिखाने के लिये व्याकुल हो उठा। पत्नी और बेटी के यह कहने पर कि मुझे देर हो जायेगी, वह एकदम चिड़चड़ा हो उठा......

मैंने आने से पहले उससे विदा ली। उसने नम्रता-पूर्वक मेरे दोनों हाथ अपने हाथों में लेकर सहलाये और काँपती आवाज़ में कहा :

"आपके आने से मुझे कितनी खुशी हुई, यह बताना कठिन है—मुद्दत के बाद आज किसी कलाप्रेमी से बातें करने का अवसर मिला है। अपनी कृतज्ञता जतलाने के लिये मैं अपने वसीयतनामें में लिख जाऊँगा कि मेरे मरने के बाद आपकी फर्म ही मेरे कला-संग्रह को नीलाम करे।"

उसके हाथ खाली अलबमों के ढेर को दुलार से सहलाने लगे।

"मैं आपसे एक वचन मांगता हूँ—इस संग्रह का बढ़िया-सा सूचीपत्र छपवाइएगा।" उसकी पत्नी और बेटी बड़ी कठिनाई से अपने कंपन को रोकने की चेष्टा कर रही थीं। मैंने उस असंभव प्रयास को पूरा करने का वचन दे डाला। उसने कृतज्ञतापूर्वक मेरे हाथ दबाये।

व्यवसायी इस संग्रह को बेचने में तुम्हारी मदद करेंगे। इसके सिवा कोई चारा नहीं, क्योंकि मेरे मरने के बाद मेरी पेन्शन भी ख़त्म हो जायेगी।"

वह बड़े दुलार से उन लुटी हुई अलबमों पर उंगलियाँ फेर रहा था। यह दृश्य बड़ा करुण था। १६१४ के बाद मैंने किसी जर्मन के चेहरे पर इतनी खुशी नहीं देखी। उसकी पत्नी और बेटी की आँखों में आँसू आ गये, जेरुसलम की उन दो बूढ़ी औरतों की तरह, जो पवित्र समाधि के खज़ाने को लुटा देखकर रोई थीं। लेकिन उस आदमी का उत्साह अब भी कम नहीं हुआ था। वह एक के बाद एक कलाकृति को दिखाता चला गया। अन्त में जब उसने सब कोरी कैनवसें अलबम में रख दीं, तो मेरे दिल का भार कुछ हल्का हुआ।

मेज़ पर कॉफी आई। मेरा मेज़मान अभी भी नहीं थका था, वह इन कलाकृतियों का इतिहास सुनाने लगा और उन्हें एक बार फिर दिखाने के लिये व्याकुल हो उठा। पत्नी और बेटी के यह कहने पर कि मुझे देर हो जायेगी, वह एकदम चिड़चड़ा हो उठा......

मैंने आने से पहले उससे विदा ली। उसने नम्रता-पूर्वक मेरे दोनों हाथ अपने हाथों में लेकर सहलाये और काँपती आवाज़ में कहा :

"आपके आने से मुझे कितनी खुशी हुई, यह बताना कठिन है—मुद्दत के बाद आज किसी कलाप्रेमी से बातें करने का अवसर मिला है। अपनी कृतज्ञता जतलाने के लिये मैं अपने वसीयतनामें में लिख जाऊँगा कि मेरे मरने के बाद आपकी फर्म ही मेरे कला-संग्रह को नीलाम करे।"

उसके हाथ खाली अलबमों के ढेर को दुलार से सहलाने लगे।

"मैं आपसे एक वचन मांगता हूँ—इस संग्रह का बढ़िया-सा सूचीपत्र छपवाइएगा।" उसकी पत्नी और बेटी बड़ी कठिनाई से अपने कंपन को रोकने की चेष्टा कर रही थीं। मैंने उस असंभव प्रयास को पूरा करने का वचन दे डाला। उसने कृतज्ञतापूर्वक मेरे हाथ दबाये।

दोनों औरतें मुझे दरवाज़े तक छोड़ने आईं। उनके गाल आंसुओं से तर थे। मैं सोचने लगा कि मैं कला-संग्रह खरीदने आया था, लेकिन मुझे कलाकृतियों की प्राप्ति की बजाय, झूठ और धोखाधड़ी में शामिल होना पड़ा।

लेकिन मुझे इसका अफसोस नहीं है, क्योंकि दुख और निराशा के इस युग में मैं एक वृद्ध के जीवन में सुख का संचार कर सका हूं। आज के वातावरण में यह सुख कहां मिलता है ?

जैसे ही मैं सड़क पर आया, मैंने खिड़की में से किसी को अपना नाम पुकारते सुना। वृद्ध की ज्योति-हीन आंखें मेरे कदमों की ओर मुड़ गईं थीं। उसने खिड़की में से नीचे झुककर अपना रूमाल हिलाकर मुझे विदा दी।

"आपकी यात्रा सुखद रहे, हेर रैकनर !"

उसकी आवाज़ में शैशव की सरलता और गूँज थी। उसके प्रफुल्ल चेहरे को मैं कभी नहीं भूलूंगा—जो सड़क पर दिखाई देने वाले चेहरों से बिल्कुल अलग था। मैंने उसके भ्रम को प्रश्रय देकर उसके जीवन को मंगलमय बनाया था। गेटे ने कहा है :

"कला के संग्रह-कर्त्ता सुखी जीव हैं !"